गोस्वामी तुलसीदास जयंती

पर

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय में हुआ भावपूर्ण आयोजन, प्रेमचंद को भी किया गया स्मरण लखनऊ।

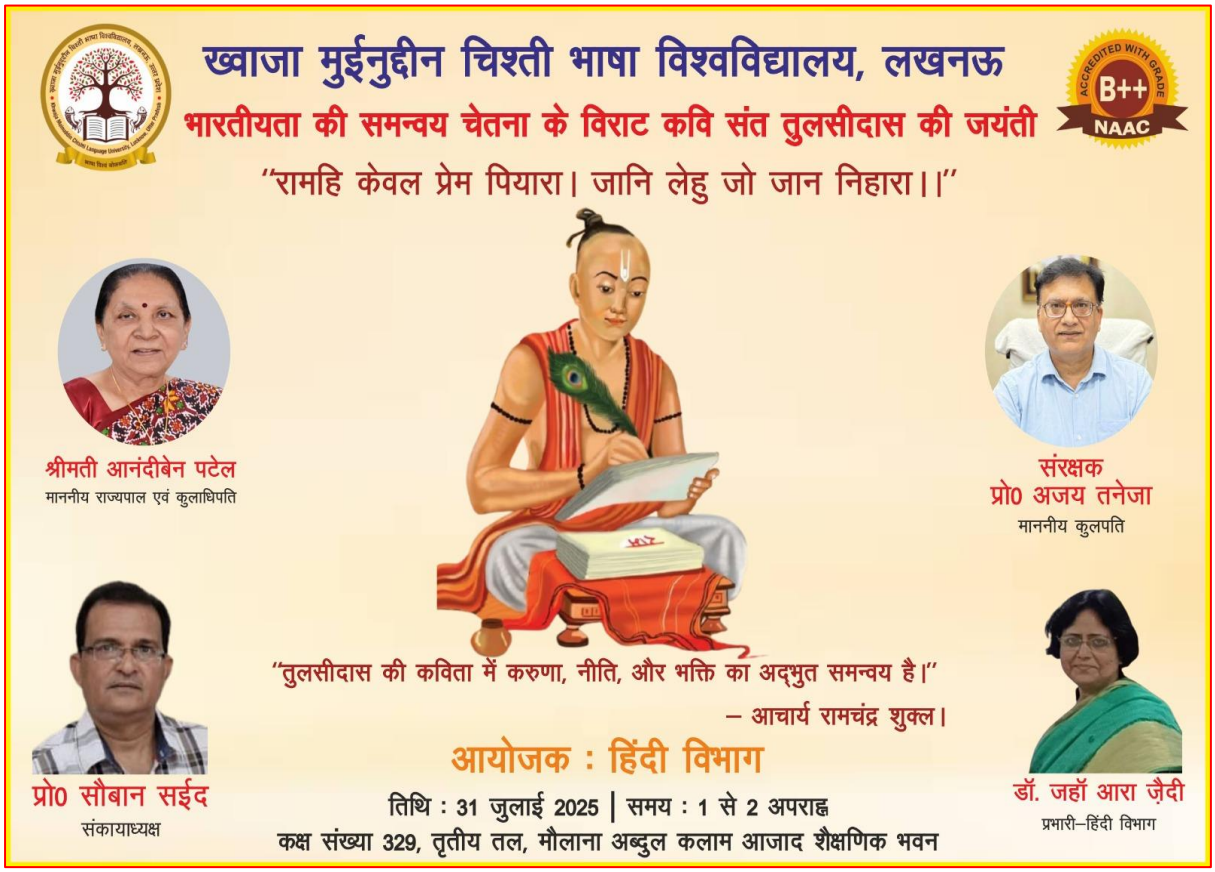

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा महान संत-कवि गोस्वामी तुलसीदास की जयंती के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसी अवसर पर प्रसिद्ध कथाकार मुंशी प्रेमचंद को भी श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया। यह आयोजन विभाग की प्रभारी डॉ. जहां आर. जैदी के नेतृत्व में संपन्न हुआ, जिनकी अध्यक्षता में कार्यक्रम का संचालन हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय की कुलानुशासक डॉ. नीरज शुक्ला उपस्थित रहे। डॉ. शुक्ला ने अपने वक्तव्य में गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए 'रामराज्य' की उनकी परिकल्पना को समकालीन समाज की आवश्यकता बताया। उन्होंने तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत आदर्श समाज और नीति-सम्मत शासन की अवधारणा को आज के संदर्भों में प्रासंगिक ठहराया।

कार्यक्रम में डॉ. हैदर मेहंदी ने तुलसी की समाजशास्त्रीय दृष्टि पर अपने विचार रखे और बताया कि किस प्रकार तुलसीदास ने तत्कालीन समाज की जटिलताओं को सरल भाषा में व्यक्त किया। विधि विभाग के अध्यक्ष डॉ. पीयूष त्रिवेदी ने तुलसी की भारतीय दृष्टिकोण पर एक गंभीर व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति और दर्शन के साथ तुलसी की गहन संबद्धता को रेखांकित किया।

डॉ. अंशुल पांडेय ने अपने वक्तव्य में विशेष रूप से परिवार और किशोरों के जीवन में तुलसी साहित्य की उपयोगिता और नैतिक शिक्षाओं पर बल दिया। वहीं, डॉ. राजकुमार सिंह ने तुलसीदास और वाल्मीकि रामायण के अंतर के माध्यम से तुलसी की जनवादी दृष्टि की विवेचना की और तुलसी की रचनाओं को जनसामान्य से जुड़ा बताया।

इस अवसर पर डॉ. विपिन कुमार सिंह ने तुलसी की राजनीतिक चेतना और उनके समय की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों में उनके योगदान पर विचार व्यक्त किए। हिंदी विभाग की शिक्षिका डॉ. आराधना स्थान ने तुलसीदास द्वारा रचित गणेश वंदना का भावपूर्ण पाठ करते हुए उनकी

समन्वयवादी दृष्टि पर चर्चा की, जिसमें उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और विविधताओं के सम्मान की बात कही।

कार्यक्रम के दौरान विभाग के छात्र अविष्कार यादव ने भी तुलसी की सामाजिक चेतना पर अपने विचार साझा किए और युवा दृष्टिकोण से तुलसी साहित्य की महत्ता को समझाया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के वरिष्ठ शिक्षक डॉ. योगेंद्र कुमार सिंह द्वारा किया गया, जिनकी संयोजन क्षमता ने कार्यक्रम को सुव्यवस्थित बनाए रखा।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक जैसे डॉ. प्रशांत सिंह, डॉ. जिया जाफरी, शोधार्थी विपिन कुमार, रजनीश कुमार सहित कई छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। अंत में, विभागाध्यक्ष डॉ. जहां आर. जैदी ने सभी वक्ताओं, आगंतुकों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया और ऐसे आयोजन को नियमित रूप से करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम ने न केवल साहित्यिक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक चेतना के स्तर पर भी उपस्थितजनों को एक गहरी अनुभूति प्रदान की।

कुलपति प्रो अजय तनेजा ने ABSS-2025 में रखा तकनीक और भाषा शिक्षा के समन्वय का दृष्टिकोण

https://samarsaleel.com/goswami-tulsidas-jayanti-and-premchand-smriti-program-organized-in-hindi-department/485363

कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभाग की प्रभारी डॉ जहां आर जैदी ने की, जबकि विश्वविद्यालय की कुलानुशासक डॉ नीरज शुक्ला मुख्य अतिथि रहीं। डॉ शुक्ला ने अपने संबोधन में गोस्वामी तुलसीदास की 'रामराज्य' की अवधारणा और उसकी वर्तमान प्रासंगिकता पर गहन विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर विभिन्न विभागों के विद्वानों ने अपने विचार साझा किए। डॉ हैदर मेहंदी ने तुलसीदास की समाजशास्त्रीय दृष्टि पर प्रकाश डाला। विधि विभागाध्यक्ष डॉ पीयूष त्रिवेदी ने तुलसी के भारतीय दृष्टिकोण पर सारगर्भित

व्याख्यान दिया। डॉ अंशुल पांडेय ने किशोरों और पारिवारिक जीवन में तुलसी के महत्व को रेखांकित किया।

डॉ राजकुमार सिंह ने तुलसीदास और वाल्मीकि रामायण के अंतर के माध्यम से तुलसी की जनवादी दृष्टि को उजागर किया। डॉ विपिन कुमार सिंह ने तुलसीदास की राजनीतिक चेतना पर अपने विचार रखे। विभाग की शिक्षिका डॉ आराधना स्थान ने 'तुलसीदास कृत गणेश वंदना' और उनकी समन्वयवादी दृष्टि पर विचार व्यक्त किए।

छात्र अविष्कार यादव ने 'तुलसी की सामाजिक चेतना' विषय पर एक प्रभावशाली भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ योगेंद्र

कुमार सिंह ने किया, और अंत में डॉ जहां आर. जैदी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

इस अवसर पर विभिन्न विभागों के शिक्षकगण, शोधार्थी और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे, जिनमें प्रशांत सिंह, डॉ जिया जाफरी, विपिन कुमार और रजनीश कुमार प्रमुख थे। यह कार्यक्रम तुलसीदास और प्रेमचंद के साहित्यिक और सामाजिक योगदान को याद करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था।

भाषा विश्वविद्यालय में तुलसीदास जयंती एवं प्रेमचंद स्मृति दिवस पर विचार गोष्ठी संपन्न

बीकेटी लखनऊ। राजधानी केभाषा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जयंती और प्रेमचंद स्मृति दिवस के अवसर पर एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में तुलसीदास की साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक चेतना पर सारगर्भित चर्चा हुई, साथ ही महान कथाकार प्रेमचंद को भी भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभाग की प्रभारी डॉ. जहां आर. जैदी ने की, जबकि कुलानुशासक डॉ. नीरज शुक्ला बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहीं। डॉ. शुक्ला ने अपने संबोधन में तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित रामराज्य की अवधारणा को वर्तमान समय में प्रासंगिक बताया।डॉ. हैदर मेहंदी ने तुलसीदास की समाजशास्त्रीय दृष्टि पर प्रकाश डाला, वहीं विधि विभागाध्यक्ष डॉ. पीयूष त्रिवेदी ने तुलसी साहित्य में निहित भारतीय दृष्टिकोण को विवेचित किया। डॉ. अंशुल पांडेय ने किशोरों और पारिवारिक जीवन में तुलसी की उपयोगिता को रेखांकित किया।डॉ. राजकुमार सिंह ने तुलसी और वाल्मीकि रामायण के अंतर के माध्यम से तुलसी की जनवादी चेतना को स्पष्ट किया, जबकि डॉ. विपिन कुमार सिंह ने तुलसी की राजनीतिक दृष्टि पर विचार रखे। विभाग की शिक्षिका डॉ. आराधना स्थान ने गणेश वंदना के माध्यम से तुलसी की समन्वयवादी दृष्टि का विश्लेषण किया।इस अवसर पर छात्र अविष्कार यादव ने तुलसी की सामाजिक चेतना विषय पर प्रभावशाली वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. योगेंद्र कुमार सिंह ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जहां आर. जैदी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षकगण–प्रशांत सिंह, डॉ. जिया जाफरी, तथा शोधार्थी विपिन कुमार, रजनीश कुमार समेत बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे। आयोजन में साहित्यिक सौंदर्य और सामाजिक विमर्श का अद्भुत समागम देखने को मिला।

सभागार में संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका शुभारम्भ विश्वविद्यालय अवसर प्राप्त होता है। जिसमें मुख्य वक्ता एवं संगोष्ठी अध्यक्ष के रूप में अवधेश 1936 के दौर में मुंशी प्रेमचंद का प्रतिमान बदल चुके थे।

डॉ. नीरज ने व्यक्त की गोस्वामी तुलसीदास की रामराज्य की अवधारणा

विशेष संवाददाता (vol)

लखनऊ। ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के तत्वावधान में गुरुवार को गोस्वामी तुलसीदास जयंती के अवसर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद का भी स्मरण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभाग की प्रभारी डॉ. जहां आर. जैदी ने की, जबकि विश्वविद्यालय की कुलानुशासक डॉ. नीरज शुक्ला कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रहें।

अपने संबोधन में डॉ. शुक्ला ने गोस्वामी तुलसीदास की रामराज्य की अवधारणा और उसकी आज की प्रासंगिकता पर विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर डॉ. हैदर मेहंदी ने तुलसीदास की समाजशास्त्रीय दृष्टि पर विचार रखे, जबकि विधि विभागाध्यक्ष डॉ. पीयूष त्रिवेदी ने तुलसी की भारतीय दृष्टिकोण पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। डॉ. अंशुल पांडेय ने किशोरों और पारिवारिक जीवन में तुलसी के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. राजकुमार सिंह ने तुलसीदास और वाल्मीकि रामायण के अंतर के माध्यम से तुलसी की जनवादी दृष्टि को उजागर किया। डॉ. विपिन कुमार सिंह ने तुलसीदास की राजनीतिक चेतना पर प्रकाश डाला। विभाग की शिक्षिका डॉ. आराधना स्थान ने तुलसीदास कृत गणेश वंदना तथा उनकी समन्वयवादी दृष्टि पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में छात्र अविष्कार यादव ने तुलसी की सामाजिक चेतना विषय पर प्रभावशाली भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. योगेंद्र कुमार सिंह ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जहां आर. जैदी द्वारा दिया गया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के शिक्षकगण प्रशांत सिंह, डॉ. जिया जाफरी तथा हिंदी विभाग के शोधार्थी विपिन कुमार, रजनीश कुमार समेत बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।